International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN :2581-9925(Online), Impact Factor: 7.555, Volume 07, No. 03(I), July- September, 2025, pp. 89-93

ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य में दलित चेतना– 'सदियों के संताप' के विशेष सन्दर्भ में

सोहन लाल रांगेरा[1*] | डॉ. आनन्द राय[2]

[1]शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
[2]शोध निर्देशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

[*]Corresponding Author: sonurangerass@gmail.com

Citation: सोहन लाल रांगेरा, आनन्द राय. (2025). ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य में दलित चेतना– 'सदियों के संताप' के विशेष सन्दर्भ में. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 07(03(I)), 89–93.

सार

यह शोध–पत्र हिंदी दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्य चेतना का विश्लेषण करता है, विशेषकर 'सदियों के संताप' के संदर्भ में। वाल्मीकि की कविताएं केवल भावनात्मक प्रतिक्रियाएं नहीं, बल्कि जातिवादी सामाजिक ढांचे के विरुद्ध एक संगठित विद्रोह हैं। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उनकी कविता में निहित दलित चेतना, ऐतिहासिक उत्पीड़न, आत्मसम्मान की आकांक्षा, और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के बिंदुओं को उद्घाटित करना है। शोध में यह पाया गया कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएं समाज में व्याप्त वर्ण–आधारित विषमता को चुनौती देती हैं। उनकी भाषा में विद्रोह है, उनकी शैली में अनुभव की प्रमाणिकता है, और उनके कथ्य में सामाजिक न्याय की पुकार है। 'सदियों के संताप' उनके काव्य का एक केंद्रीय प्रतीक है, जो दलित समाज की पीढ़ियों से चली आ रही मानसिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पीड़ा को स्वर देता है। उनकी रचनाओं में प्रयुक्त प्रतीकात्मकता, मिथकों की पुनर्व्याख्या और यथार्थ की धारदार प्रस्तुति, उन्हें समकालीन हिंदी काव्य के विशिष्ट कवि के रूप में स्थापित करती है। इस शोध के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि का काव्य साहित्य न केवल दलित अनुभवों का प्रतिबिंब है, बल्कि वह सामाजिक परिवर्तन की एक सशक्त प्रेरणा भी है।

शब्दकोश: *दलित चेतना, संताप, भावनात्मक,सांस्कृतिक, आत्मसम्मान, सामाजिक न्याय, अनुभव, प्रतीक, पुनर्व्याख्या, समकालीन, आलोचनात्मक, सौंदर्यात्मक, अनुभव, प्रतिबिम्ब, परिवर्तन।*

प्रस्तावना

दलित साहित्य भारतीय साहित्य की वह शाखा है जो सदियों से हाशिये पर खड़ी जातियों के दुख, पीड़ा, संघर्ष और अस्मिता की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह साहित्य केवल सामाजिक यथार्थ का चित्रण नहीं करता, बल्कि यह जातिवादी व्यवस्था के विरुद्ध प्रतिरोध और बदलाव का घोषणापत्र है। इस साहित्य की चेतना, जिसे हम 'दलित चेतना' कहते हैं, वह केवल एक भाव नहीं, बल्कि एक सामाजिक–राजनीतिक दृष्टिकोण है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम दलित साहित्य में अग्रगण्य है। वे केवल एक साहित्यकार नहीं, बल्कि एक सामाजिक चिंतक, कवि और क्रांतिकारी विचारक थे जिन्होंने अपने काव्य और आत्मकथात्मक लेखन के माध्यम

[*] *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

से समाज की वर्ण–व्यवस्था को चुनौती दी। उनकी कविताएं केवल शाब्दिक सजावट नहीं, बल्कि उनके अनुभवों की आग से निकलकर आए हुए भाव हैं। उन्होंने 'जूठन' के माध्यम से अपने जीवन की पीड़ा को आत्मकथा में ढाला, वहीं "बस! बहुत हो चुका", "थोड़ी–सी जमीन चाहिए" जैसी कविताएं उनके अंदर की ज्वलंत दलित चेतना की साक्षी हैं।

'सदियों के संताप' केवल एक वाक्यांश नहीं, बल्कि वह संचित पीड़ा है जो दलित समाज ने पीढ़ियों तक झेली। यह संताप केवल शारीरिक शोषण नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक दमन की परतों में छिपा वह ऐतिहासिक घाव है, जिसे वाल्मीकि ने अपनी कविता में उजागर किया। यह चेतना केवल व्यक्तिगत नहीं, सामूहिक है, और यह भारत की सामाजिक बनावट की आत्मा को कुरेदतीप है। इस शोध–पत्र का उद्देश्य है कि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में निहित दलित चेतना का विश्लेषण किया जाए, विशेषकर उस 'सदियों के संताप' के विशेष सन्दर्भ में जो उनके साहित्य में बार–बार उभरता है। यह विश्लेषण केवल उनके काव्य–शिल्प तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि उनके अनुभवों, प्रतीकों, भाषा और सामाजिक दृष्टिकोण के सहारे उस चेतना की तहों को समझने का प्रयास करेगा जो दलित विमर्श का आधार है।

- ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्य दृष्टि– ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएं केवल संवेदनाओं का दस्तावेज नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक क्रांति का औजार हैं। उनकी काव्य–दृष्टि किसी एक विचारधारा या शैली में सीमित नहीं, बल्कि जीवन के कटु अनुभवों, जातीय दमन, पीड़ा और अस्मिता की लड़ाई से उपजी चेतना पर आधारित है। उनकी कविताएं भाषा, शैली और विषयवस्तु में उस दलित अनुभव की प्रतिनिधि हैं जो साहित्य में लंबे समय तक अनुपस्थित रहा।

वाल्मीकि की कविता 'बस! बहुत हो चुका' एक ऐसा उदाहरण है, जिसमें उनका आक्रोश, हताशा और संघर्ष झलकता है। इसमें कवि उस अन्यायपूर्ण समाज व्यवस्था के विरुद्ध एक स्पष्ट स्वर में बोलता है जो जातिगत आधार पर शोषण को संस्थागत रूप देती हैः

- "हमने भी जन्म लिया है/सूरज की तरह चमकने के लिए/पर चीर डाली जाती हैं/हमारी ही किरणें..."

इस कविता में सूरज जैसे वैश्विक प्रतीक को दलित अस्मिता के साथ जोड़ना एक नवीन काव्य–दृष्टि को जन्म देता है।

उनकी कविता 'थोड़ी–सी जमीन चाहिए' में एक दलित व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकताओं – रोटी, सम्मान और जमीन – के लिए लड़ाई को मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है। वाल्मीकि की दृष्टि में दलित चेतना आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता और सामाजिक समानता की ओर अग्रसर एक क्रांतिकारी विचार है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का काव्य प्रतीकात्मकता और बिम्ब विधान से भी समृद्ध है। वे लोकजीवन के बिंबों, प्रकृति के उपमानों, और धार्मिक मिथकों को पलटकर ऐसे प्रस्तुत करते हैं कि वह शोषित की दृष्टि से यथार्थ की नई व्याख्या करते हैं।

उनकी भाषा सीधी– सादी, संवादात्मक और यथार्थपरक होती है। वे जटिलता से दूर रहते हैं ताकि उनकी कविता दलित समाज तक सहजता से पहुंच सके। उनकी शैली में संवेदना के साथ–साथ एक रोष है – यह काव्य में विद्रोह का स्वर रचता है जो परंपरागत हिंदी कविता से भिन्न है। इस प्रकार, ओमप्रकाश वाल्मीकि की काव्य–दृष्टि केवल साहित्यिक दृष्टि नहीं, बल्कि एक सामाजिक दृष्टि है जो शोषितों की चेतना को जगाने और उन्हें स्वर देने का कार्य करती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के काव्य में दलित चेतना के तत्व

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएं केवल एक वर्ग की पीड़ा का चित्रण नहीं हैं, बल्कि वे पूरे समाज के उस ढांचे की गहरी आलोचना हैं जो जातिवाद, भेदभाव और सामाजिक वर्चस्व पर आधारित है। उनकी रचनाओं

में दलित चेतना केवल भावात्मक नहीं, बल्कि एक जागरूक, तार्किक और विद्रोही दृष्टि के रूप में उभरती है। इस चेतना को हम कुछ प्रमुख तत्वों में समझ सकते हैं:

- सामाजिक अन्याय और वर्ण व्यवस्था की आलोचना– वाल्मीकि की कविताएं हिंदू वर्ण व्यवस्था पर तीखा प्रहार करती हैं। उनके लिए धर्म और परंपराएं वे औजार हैं जो दलितों को पीढ़ियों तक दबाकर रखती रही हैं। उदाहरण के तौर पर कविता 'बस! बहुत हो चुका' में वे लिखते हैं:
  - "तेरे देवता भी/हमारे खून से बने हैं/तेरी गाथाएं भी/हमारे लहू से लिखी गई हैं।"

  यहां कवि स्पष्ट करता है कि श्रम करने वाले दलितों ने ही समाज का निर्माण किया, लेकिन उन्हें धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से अपवित्र घोषित कर हाशिये पर डाल दिया गया।
- आत्मगौरव और अस्मिता की पुकार– दलित चेतना का एक प्रमुख तत्व आत्मसम्मान है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता "थोड़ी–सी जमीन चाहिए" में केवल भूमि की मांग नहीं है, बल्कि वह सम्मानजनक जीवन की मांग है:
  - "हमें हमारे हिस्से का आसमान चाहिए/जिसमें उड़ सकें/बिना किसी भय के।"

  यहां अस्मिता केवल शारीरिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक मुक्ति की आकांक्षा बन जाती है।

विरोध और प्रतिरोध की भाषा

वाल्मीकि की भाषा में कोमलता नहीं, तीव्रता है। उनकी कविताओं में भावुकता की बजाय क्रांतिकारी आक्रोश है, जो उत्पीड़कों को सीधे चुनौती देता है। वे शोषण पर चुप रहने के पक्षधर नहीं, बल्कि कविताओं के माध्यम से एक सजग और मुखर विरोध प्रस्तुत करते हैं।

- "अब और नहीं सहेंगे/अब हम भी/अपने हक की लड़ाई लड़ेंगे।"

उनकी शैली कहीं–कहीं घोषणा–पत्र जैसी लगती है – यह दलित चेतना को संघर्षशील बनाती है।

- **प्रतीक और बिंबों का प्रयोग–** वाल्मीकि कविता में प्रतीकों का बड़ा सशक्त प्रयोग करते हैं। उदाहरण के तौर पर 'जूठन' एक ऐसा प्रतीक है जो दलित जीवन की सांस्कृतिक हीनता और शोषण की निरंतरता को दर्शाता है। उसी तरह 'धूप', 'अंधेरा', 'चूहा', 'रोटी' आदि प्रतीकों के माध्यम से वे उन छोटी–छोटी चीजों में बड़ी सामाजिक विडंबनाएं उभारते हैं।
- **इतिहास की पुनर्व्याख्या–** ओमप्रकाश वाल्मीकि की चेतना अतीत के मिथकों की आलोचना भी करती है। वे धार्मिक कहानियों को दलित दृष्टि से देखना सिखाते हैं। उनका मानना है कि इतिहास को जिस तरह लिखा गया है, वह शोषकों की दृष्टि से है, न कि शोषितों की। इसीलिए उनके काव्य में रामायण, शंबूक, एकलव्य, चांडाल जैसे पात्र बार–बार आते हैं, लेकिन एक नए विमर्श के साथ।
- **संघर्ष का यथार्थ और विश्वास–** हालांकि उनकी कविता में आक्रोश है, लेकिन वह केवल विध्वंसात्मक नहीं, उसमें आशा और परिवर्तन की चेतना भी है। वे दलितों को केवल पीड़ित नहीं, बल्कि सजग नागरिक के रूप में देखना चाहते हैं। उनके काव्य में संघर्ष के बाद समानता की संभावनाएं दिखाई देती हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित चेतना सामाजिक विवेक, सांस्कृतिक आत्मबोध और राजनीतिक प्रतिरोध की त्रिवेणी बन जाती है। उनकी कविताएं न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक दस्तावेज बन जाती हैं जो दलित अनुभव को भाषा और भाव का स्वरूप देती हैं। यह चेतना ना केवल दलितों को अपनी पीड़ा समझने में मदद करती है, बल्कि संपूर्ण समाज को आत्मालोचन की ओर प्रेरित करती है।

'सदियों के संताप' का प्रतीकात्मक और ऐतिहासिक स्वरूप

"सदियों के संताप" केवल एक काव्यात्मक वाक्यांश नहीं है, बल्कि यह ओमप्रकाश वाल्मीकि की रचनाओं में गहराई से गूंथा हुआ ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभव है। यह एक सांकेतिक रूप है, जो दलित समाज की उस लंबी पीड़ा को दर्शाता है जो अनादिकाल से चली आ रही है। वाल्मीकि की कविताएं इस पीड़ा को केवल एक व्यक्तिगत या भावनात्मक अनुभव के रूप में नहीं, बल्कि सामूहिक ऐतिहासिक यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

- इतिहास के वंचित स्वर– वाल्मीकि मानते हैं कि इतिहास को हमेशा सत्ता और शोषकों की दृष्टि से लिखा गया है। दलितों की पीड़ा, संघर्ष, और योगदान को जानबूझकर विस्मृत किया गया है। उनकी कविता में ''सदियों का संताप'' उस ऐतिहासिक चुप्पी का प्रतिरोध है जिसमें दलितों की पीड़ा को कोई आवाज नहीं मिली।
  - "हमारी हड्डियों से/तेरे महल खड़े हुए/फिर भी/हमने इतिहास में नाम नहीं पाया..."

  यह पंक्ति दर्शाती है कि सदियों से दलित वर्ग ने सभ्यता को अपने श्रम से गढ़ा, फिर भी उसे कभी उसका स्थान नहीं मिला।
- मनुवादी व्यवस्था की जड़ता– 'सदियों के संताप' की सबसे बड़ी वजह मनुवादी वर्ण व्यवस्था है, जो हजारों वर्षों तक दलितों को शिक्षा, धर्म, भूमि और सत्ता से दूर रखती रही। वाल्मीकि इस व्यवस्था की जड़ता को अपनी कविताओं में उजागर करते हैं। वे कहते हैं कि यह संताप केवल भूतकाल की बात नहीं, बल्कि आज भी विद्यमान है।
  - "अभी भी/वही जूठन पर जीवन/वही घृणा की निगाहें/वही अपवित्र घोषित जीवन..."

  उनकी कविता में यह संताप केवल अतीत की गाथा नहीं, वर्तमान की भी आलोचना है।
- व्यक्तिगत अनुभवों में समष्टिगत पीड़ा– वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' में कई ऐसे प्रसंग हैं, जो उनके निजी जीवन की घटना लगते हैं, लेकिन वे पूरे दलित समाज की पीड़ा के प्रतीक बन जाते हैं। जैसे दृ विद्यालय में झाड़ू लगवाना, भोजन के दौरान अलग बैठाना, और अपमान का लगातार अनुभव। यही ''सदियों का संताप'' है, जो व्यक्ति की चेतना से होकर सामाजिक बनता है।
- सांस्कृतिक दमन का अनुभव – 'सदियों का संताप' केवल शारीरिक उत्पीड़न नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दमन का अनुभव भी है। दलितों को न तो अपनी भाषा, देवी–देवता, कला या इतिहास को मान्यता मिली, और न ही उनके सांस्कृतिक प्रतीकों को मुख्यधारा में स्थान। वाल्मीकि की कविता ऐसे सांस्कृतिक विस्थापन के विरुद्ध एक सांस्कृतिक पुनर्स्थापन का आह्वान है।
  - "हमारे भी थे/देवीदृदेवता/पर तेरे मंदिरों में/उनका नाम नहीं था..."

  यह दर्द पीढ़ियों से बोया गया है और यही ''सदियों का संताप'' है।
- वर्तमान में अतीत की पुनरावृत्ति– वाल्मीकि स्पष्ट करते हैं कि ''सदियों का संताप'' केवल इतिहास नहीं, बल्कि आज भी जीवित है – वंचना, आरक्षण विरोध, सामाजिक बहिष्कार, और जातिगत हिंसा के रूप में। उनकी कविताओं में यह बार–बार उभरता है कि समय बदलने के बावजूद दलितों की सामाजिक स्थिति में बड़ा परिवर्तन नहीं आया।

'सदियों का संताप' ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविता में एक केंद्रीय अवधारणा बनकर उभरता है। यह संताप केवल अतीत की कथा नहीं, वर्तमान की विवेचना और भविष्य की चुनौती है। उनकी रचनाएं एक ऐतिहासिक चेतना को स्वर देती हैं, जो वंचितों के इतिहास को पुनः लिखना चाहती हैं – अपने शब्दों में, अपनी दृष्टि से। उनकी कविता एक आवाज है उस संतप्त आत्मा की जो अब मौन नहीं है, जो अब बदलाव चाहती है।

उनकी कविताएं महज साहित्यिक रचनाएं नहीं, बल्कि सामाजिक संघर्ष के शस्त्र हैं। जैसे "अब और नहीं", "बस! बहुत हो चुका", "सड़क", आदि कविताओं में दलित जीवन की त्रासदी, विद्रोह और पुनःस्थापन की आकांक्षा स्पष्ट रूप से उभरती है। उनका काव्य सृजन एक तरह की सामाजिक सक्रियता है जो पाठक को केवल भावुक नहीं करता, उसे सजग और क्रियाशील बनाता है। उन्होंने चुप कराए गए इतिहास को आवाज दी, भुला दिए गए चरित्रों को केंद्र में लाया और दबे हुए अनुभवों को काव्य में दर्ज किया।

ओमप्रकाश वाल्मीकि का साहित्य दलित विमर्श की नींव का एक मजबूत स्तंभ है। उन्होंने न केवल दलित चेतना को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी, बल्कि समाज को उसकी विकृतियों का आईना भी दिखाया। उनकी कविताएं, आत्मकथाएं और विचार आज भी सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा बनी हुई हैं।

निष्कर्ष

ओमप्रकाश वाल्मीकि हिंदी दलित साहित्य के शिखर पुरुषों में से एक हैं। उन्होंने कविता, आत्मकथा, आलोचना और सामाजिक लेखन के माध्यम से दलित चेतना को वैचारिक और कलात्मक दोनों स्तरों पर समृद्ध किया। उनका साहित्य केवल भावनात्मक आक्रोश नहीं है, बल्कि उसमें गहन सामाजिक विश्लेषण, ऐतिहासिक दृष्टि और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण की प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई देती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का काव्य साहित्य न केवल दलित जीवन की अभिव्यक्ति है, बल्कि वह सामाजिक अन्याय के विरुद्ध एक सशक्त प्रतिरोध भी है। उनकी कविताओं में 'दलित चेतना' केवल एक विचार नहीं, बल्कि एक जीता–जागता अनुभव है, जो सदियों से शोषण, बहिष्कार और अपमान की अग्नि में तपकर निखरा है। उन्होंने अपनी लेखनी को सामाजिक यथार्थ के सबसे अंधेरे कोनों में ले जाकर वहां प्रकाश की संभावना ढूंढ़ी। 'सदियों के संताप' को उन्होंने केवल शब्दों में नहीं पिरोया, बल्कि उसे इतिहास, अनुभव और विद्रोह के साथ गूंथा। उनकी कविताएं उस मौन को तोड़ती हैं जिसे सदियों से दलित समाज ढोता रहा। उनकी भाषा में विद्रोह है, उनके प्रतीकों में अस्मिता है, और उनके कथ्य में बदलाव की उत्कंठा। वाल्मीकि की रचनाएं एक ओर दलितों को अपनी पहचान और आत्मविश्वास लौटाती हैं, वहीं दूसरी ओर समाज को आत्मालोचना के लिए विवश करती हैं। उनकी कविता समाज से प्रश्न पूछती है कृ सिर्फ सहानुभूति नहीं, समानता की मांग करती है। आज जब दलित साहित्य एक स्वतंत्र और सशक्त धारा के रूप में उभर रहा है, ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएं उसकी आधारशिला के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगी। उनका काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि वह एक सामाजिक दस्तावेज है जो जाति, अन्याय और उत्पीड़न के खिलाफ सामूहिक चेतना का घोष करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वाल्मीकि, ओ. (1997). 'जूठन'. राधाकृष्ण प्रकाशन.
2. लिंबाळे, शरणकुमार. (2005). 'दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र'. वाणी प्रकाशन.
3. शर्मा, रामजनम. 'समकालीन हिंदी कविता और दलित विमर्श'. प्रभात प्रकाशन.
4. ढसाल, नामदेव. 'दलित साहित्य की भूमिका'. साहित्य अकादमी.
5. वाल्मीकि, ओ. 'सदियों का संताप और अन्य कविताएं'. नवभारत साहित्यम.
6. गहीरे, अशोक. 'हिंदी दलित कविता का विकास'. ओरिएंट ब्लैकस्वान.
7. त्रिवेदी, हरीश. 'दलित चेतना और हिंदी साहित्य'. राजकमल प्रकाशन.

❑❑❑